INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 4 | MAY – 2026

मध्य प्रदेश के आकाशवाणी केन्द्रों की स्थितियों का अध्ययन

वनिता मरकाम
शोधार्थी संगीत,
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.).

डॉ. देवाशीष बनर्जी
विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.).

सारांश –

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में संचार माध्यमों ने जनमानस को जागरूक करने, शिक्षित करने एवं सांस्कृतिक रूप से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनमें आकाशवाणी (आल इंडिया रेडियो) एक ऐसा माध्यम रहा है, जिसने देश की विविधता को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया। विशेष रूप से मध्य प्रदेश, जो विविध भाषा–बोलियों, जनजातीय समुदायों और लोक–सांस्कृतिक विरासत से समृद्ध है, वहाँ आकाशवाणी केन्द्रों की भूमिका अत्यंत प्रभावशाली रही है। मध्य प्रदेश के विभिन्न भागों में स्थापित आकाशवाणी केन्द्रों ने न केवल स्थानीय जनजीवन की अभिव्यक्ति का मंच प्रदान किया, बल्कि उन्होंने क्षेत्रीय संस्कृति, भाषा, लोक संगीत, पारंपरिक ज्ञान और सामाजिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखने का कार्य किया है। इन केन्द्रों के माध्यम से ग्राम्य व शहरी जनजीवन के बीच संवाद स्थापित हुआ है, जिससे लोकधर्मी विषयों, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा और राष्ट्रीय विकास जैसे मुद्दों पर लोगों को जोड़ने में सफलता मिली है।

मुख्य शब्द – स्वतंत्रता, भारत, संचार, जनमानस, जागरूकता, सांस्कृतिक एवं आकाशवाणी।

प्रस्तावना –

मध्य प्रदेश के आकाशवाणी केन्द्र केवल सूचना प्रसारण के माध्यम नहीं हैं, अपितु वे राज्य की स्थानीय संस्कृति, लोकजीवन, भाषिक विविधता तथा सामाजिक चेतना के संवाहक के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। प्रदेश के विभिन्न अंचलों में स्थापित आकाशवाणी केन्द्र स्थानीय आवश्यकताओं एवं सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं। मालवा क्षेत्र में मालवी, बुंदेलखंड में बुंदेली, बघेलखंड में बघेली, निमाड़ क्षेत्र में निमाड़ी तथा जनजातीय क्षेत्रों में गोंडी, भीली एवं कोरकू जैसी लोकभाषाओं में प्रसारित कार्यक्रम श्रोताओं को अपनी भाषा एवं संस्कृति से आत्मीय रूप में जोड़ते हैं।[1]

इन कार्यक्रमों के माध्यम से लोकगीत, लोकनाट्य, पारम्परिक कथाएँ, रीति–रिवाज तथा क्षेत्रीय पर्व–त्योहारों से संबंधित सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित एवं प्रचारित किया जाता है। तीज, हरियाली अमावस्या, दीपावली तथा अन्य स्थानीय पर्वों के अवसर पर विशेष लोकसंगीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रसारण जनमानस की भावनाओं से प्रत्यक्ष रूप में जुड़ता है।[2]

आकाशवाणी केन्द्रों द्वारा प्रसारित 'कृषि दर्शन', 'किसान वाणी' तथा ग्रामीण विकास संबंधी कार्यक्रमों ने मध्य प्रदेश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को मौसम की जानकारी, उन्नत कृषि तकनीक, फसल संरक्षण, बीज चयन तथा बाजार भाव जैसी उपयोगी सूचनाएँ सरल एवं स्थानीय भाषा में उपलब्ध कराई जाती हैं।[3]

विशेषतः मंडला, बैतूल, छिंदवाड़ा तथा शहडोल जैसे जनजातीय बहुल क्षेत्रों के केन्द्रों द्वारा गोंडी, भीली तथा कोरकू भाषाओं में प्रसारित कार्यक्रमों ने जनजातीय समाज की सांस्कृतिक अस्मिता को सशक्त किया है। इन कार्यक्रमों में जनजातीय लोकगीत, कथाएँ, परम्पराएँ तथा स्थानीय नायक–नायिकाओं के योगदान को प्रमुखता प्रदान की जाती है।[4]

सामाजिक आपदा एवं संकट के समय भी आकाशवाणी ने जनसंचार के प्रभावी माध्यम के रूप में अपनी उपयोगिता सिद्ध की है। बाढ़, सूखा, महामारी अथवा प्राकृतिक आपदाओं के दौरान रेडियो द्वारा समय पर चेतावनी, राहत संबंधी सूचनाएँ एवं प्रशासनिक दिशा–निर्देश प्रसारित किए जाते रहे हैं। कोविड–19 महामारी के समय आकाशवाणी केन्द्रों ने स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता, वैक्सीनेशन अभियान तथा सरकारी दिशा–निर्देशों के प्रचार–प्रसार में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[5]

इसी प्रकार 'युवा वाणी', 'रेडियो पाठशाला' तथा महिला एवं बाल विकास आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों, युवाओं, महिलाओं तथा अल्पसंख्यक वर्गों को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक जागरूकता से जोड़ा गया।[6]

वस्तुतः मध्य प्रदेश के आकाशवाणी केन्द्र एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक सेतु के रूप में कार्य करते हैं, जो शहरी एवं ग्रामीण जीवन, लोक एवं शास्त्रीय संस्कृति, शिक्षा एवं मनोरंजन तथा सामान्य एवं जनजातीय समाज के मध्य संतुलन स्थापित करते हैं। रेडियो की व्यापक पहुँच ने सामाजिक समावेशन, सांस्कृतिक संरक्षण तथा जनजागरूकता को सुदृढ़ बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है।[7]

आधुनिक समय में आकाशवाणी भारत सरकार के अधीन संचालित एक राष्ट्रीय प्रसारण संस्था है। 'आकाशवाणी' शब्द के उद्भव का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सन् 1935 ई. में तत्कालीन मैसूर रियासत द्वारा संचालित रेडियो स्टेशन को 'आकाशवाणी' नाम प्रदान किया गया था। इसके उपरांत 8 जून 1936 ई. को ब्रिटिश सरकार द्वारा रेडियो प्रसारण संस्था का आधिकारिक अंग्रेजी नाम 'ऑल इंडिया रेडियो' रखा गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विभिन्न देशी रियासतों के रेडियो केन्द्रों को 'ऑल इंडिया रेडियो' में सम्मिलित कर लिया गया तथा भारतीय भाषाओं में 'आकाशवाणी' शब्द को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया।[8] वर्तमान समय में अंग्रेजी में 'ऑल इंडिया रेडियो' तथा भारतीय भाषाओं में 'आकाशवाणी' शब्द का ही प्रयोग किया जाता है।

विश्लेषण –

आकाशवाणी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से ज्ञात होता है कि मद्रास में सन् 1924 ई. को स्थापित 'मद्रास प्रेसिडेंसी रेडियो क्लब' ने अपना पहला प्रसारण 21 जुलाई सन 1924 ई. को सर्वप्रथम आरम्भ किया। अपना पहला प्रसारण 21 जुलाई सन् 1924 ई. को सर्वप्रथम आरम्भ किया। प्रसारण के क्षेत्र में भारतवर्ष का यह प्रथम चरण था परन्तु यह प्रसारण कुछ शौकीन किस्म के लागों के आनन्द का ही साधन मात्र था। आर्थिक कठिनाईयों के कारण यह क्लब अक्टूबर सन् 1927 ई. में बन्द हो गया। इससे पहल सन् 1926 ई. में 'इण्डियन ब्रॉडकास्टिंग कम्पनी लिमिटेड' नाम की एक निजी संस्था ने भारत सरकार के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के अनुसार 'इण्डियन ब्रॉडकास्टिंग कम्पनी लिमिटेड' को बम्बई और कलकत्ता में रेडियो स्टेशन खोलने का उत्तरदायित्व सौंपा गया। इस प्रकार सन् 1927 ई. में 23 जुलाई को बम्बई और 26 अगस्त को कलकत्ता आकाशवाणी केन्द्रों की स्थापना हुई। इन दोनों केन्द्रों के ट्रांसमीटरों की कार्यक्षमता 1.5 किलो वाट मीडियम वेव थी। इनके कार्यक्रम 30 मील की दूरी के क्षेत्र में सुने जा सकते थे। उस समय रेडियो लाइसेन्सों की संख्या 1,000 के लगभग थी। बम्बई केन्द्र की विधिवत स्थापना से 23 जुलाई सन् 1927 ई. को भारत में प्रथम प्रसारण की तिथि माना जा सकता है।

अक्टूबर, सन् 1927 ई. में जब 'मद्रास प्रेसीडेंसी रेडियो क्लब' बन्द हुआ तब उसने अपना ट्रांसमीटर मद्रास नगर निगम को दे दिया। निगम ने प्रारम्भिक जानकारी एकत्र करने के पश्चात 1 अप्रैल सन् 1930 ई. से प्रसारण की नियमित सेवा शुरू कर दी। यह सेवा प्रातः 5:30 से प्रातः 7:30 तक होती थी और इसके अन्तर्गत

प्रतिदिन संगीत प्रसारित किया जाता था। कार्यक्रम के दैनिक प्रसारण को भी एक निश्चित रूप दिया गया। जैसे सोमवार के दिन केवल पाश्चात्य संगीत, रविवार तथा अन्य अवकाश के दिनों में सुबह 10 से 11 बजे तक की एक रेखा और प्रारम्भ की गयी जिनमें केवल ग्रामोफोन रिकार्ड का प्रसारण किया जाता था। स्कूल के छात्रों के लिए संगीत और कहानियों का एक प्रसारण सायं 4 से 5.30 बजे तक किया जाने लगा। निःसंदेह प्रसारण के इतिहास में यह एक उल्लेखनीय प्रयास था। यह सेवा 16 जून सन् 1938 ई. तक चलती रही और इसी दिन आकाशवाणी के मद्रास केन्द्र के प्रसारण का अंग बन गयी। मद्रास केन्द्र का प्रसारण 10 किलोवाट के शार्टवेब ट्रांसमीटर और 25 वाट के मीडियम वेब ट्रांसमीटर से प्रारम्भ किया गया। मद्रास में क्लब की स्थापना से प्रेरित होकर अन्य नगरों में स्थापित क्लबों ने प्रसारण कार्य प्रारम्भ कर दिये। सन् 1928 ई. में लाहौर के एक क्लब ''यंगमैन क्रिश्चियन एसोसियेशन'' ने प्रसारण आरम्भ किया। लाहौर में आकाशवाणी के केन्द्र का उद्घाटन 16 दिसम्बर सन् 1937 ई. को हुआ। इसकी कार्यक्षमता 5 किलोवाट मीडियम वेब थी। उत्तर भारत में देहरादून में स्थापित नागरिकों तथा जिला प्रशासन के सहयोग से एक स्वैच्छिक प्रसारण केन्द्र की स्थापना 06 अप्रैल सन् 1936 ई. को हुई। लेकिन आर्थिक कठिनाईयों से एक प्रयोग हुआ। इसका प्रसारण 01 फरवरी सन् 1949 ई. तक चला, जिस दिन इलाहाबाद केन्द्र औपचारिक रूप से अस्तित्व में आया।

मार्कोनी कम्पनी ने 23 फरवरी सन् 1930 ई. को चेम्सफोर्ड में एक छोटा सा ट्रांसमीटर लगाकर विश्व में सर्वप्रथम रेडियो प्रसारण प्रारम्भ किया। इस कम्पनी ने 'फ्रंटियर–प्रांत' की सरकार को एक ट्रांसमीटर तथा गाँव के लोगों के लिए कुछ रेडियो सैट सन् 1935 ई. में इस शर्त पर उधार दिये कि यदि उनका यह प्रयोग सफल हो गया तो 'प्रांतीय–सरकार' सभी उपकरण खरीद लेगी। वास्तव में मार्कोनी कम्पनी की रुचि इस बात में थी कि उनके उपकरण भी बिकें और रेडियो प्रसारण का भी विस्तार हो। इस प्रकार फ्रंटियर सरकार ने सन् 1935 ई. में पेशावर में भी इन उपकरणों की सहायता से रेडियो प्रसारण आरम्भ किया। यह प्रयोग सफल रहा और 01 अप्रैल सन् 1937 ई. में प्रांतीय सरकार ने पेशावर का केन्द्र भारत सरकार को सौंप दिया।

इस घोषणा की बड़ी तीखी प्रतिक्रिया हुई और सरकार पर सेवा को चालू रखने का चारों ओर से दबाव डाला गया। प्रसारण को कुछ समय तक चलाने का निर्णय लिया गया लेकिन वायरलेस बल्ब, रेडियो सैट इत्यादि उपकरणों पर 50 प्रतिशत आयात कर बढ़ा दिया गया। जिसके परिणाम स्वरूप संस्कार को कुछ आर्थिक राहत मिली और सन् 1932 ई. से सन् 1935 ई. तक का समय आर्थिक दृष्टि से काफी अच्छा सिद्ध हुआ।

फील्डन का आगमन –

30 अगस्त सन् 1935 ई. का दिन भारतीय प्रसारण के लिए स्वर्णिम दिवस कहा जा सकता है। जब सरकार ने वी.पी.सी. के लॉयनल फील्डन के ऊपर भारत में प्रसारण के विकास की योजनाओं को बनाने तथा क्रियान्वित करने का भार सौंपा। वास्तव में फील्डन भारतीय प्रसारण के पहले कंट्रोलर मात्र ही नहीं थे वरन् उन्हें सुव्यवस्थित योजनाबद्ध और नियमित प्रसारण सेवा का जन्मदाता कहा जा सकता हे। फील्डन के प्रयासों के कारण 01 जनवरी सन् 1936 ई. को देश की राजधानी के प्रमुख केन्द्र अर्थात् दिल्ली केन्द्र का उद्घाटन हुआ।

ऑल इण्डिया रेडियो –

दिसम्बर सन् 1935 ई. में दिल्ली केन्द्र के लिए एक और शॉर्ट वेव ट्रांसमीटर की व्यवस्था की गई जिससे इस केन्द्र के पास 'ए' और 'बी' दो चैनल हो गए। दिल्ली केन्द्र के उद्घाटन के साथ ही भारत में प्रसारण के इतिहास में एक नया मोड़ आया। 8 जून सन् 1936 ई. को 'इण्डियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस' का नाम बदल कर 'ऑल इण्डिया रेडियों' रख दिया गया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के दिन तक पेशावर, लाहौर, लखनऊ, मद्रास, ब्रॉडकास्टिंग कार्पोरेशन द्वारा म्रदास केन्द्र, त्रिपुरापल्ली, ढाका सहित आज इण्डिया रेडियो के कुल केन्द्रों की संख्या 9 तथा देसी रियासतों के केन्द्रों की संख्या 5 हो गई थी। विभाजन के पश्चात् (1947 ई. से) ऑल इण्डिया रेडियो पर संगीत कार्यक्रम –

1. **शास्त्रीय कंठ संगीत प्रसारण** – शास्त्रीय कठ संगीत को सदैव अन्य संगीत प्रसारणों की तुलना में प्रधानता दी गई थी तथा इसके सम्प्रेषण के समय लागों की क्षेत्रीय सार्मथ्य के अनुसार परिवर्तित होते रहे।

उदाहरणतः प्रमुख क्षेत्रीय केन्द्रों जैसे दिल्ली, मद्रास, कलकत्ता, बम्बई, लखनऊ और तिरूचि आदि से इसका प्रसारण अपेक्षाकृत दीर्घतर अन्तराल के लिए होता था। दिल्ली केन्द्र से शास्त्रीय कण्ठ संगीत की एक गोष्ठी प्रति सप्ताह प्रसारित की जाती थी। इसमें चौदह से पन्द्रह उच्च स्तरीय कलाकार भाग लेते थे। व्युत्पन्न और छायालाग रागों को प्रदर्शन होता था तथा उन संगीतज्ञों की आलोचना भी प्रसारित की जाती थी। आकाशवाणी ने एक ही राग पर आधारित एक रूचिकर कार्यक्रम का भी आयोजन किया जिसका नाम था 'एक राग दो रूप', इसमें 'ख्याल' और 'गजल' को एक ही राग में प्रस्तुत किया गया था ताकि शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाया जा सके। दिल्ली स्टेशन की ही तुलना में, पेशावर जैसे क्षेत्रीय केन्द्रों ने 'टप्पा' नामक शास्त्रीय कंठ संगीत के रूप को अपना लिया और लखनऊ ने 'ठुमरी' तथा 'दादरा' की लोकप्रियता के लिए यही सब किया।

आकाशवाणी के बहुत से केन्द्रों ने विभिन्न नामों–'राग रागनियों', 'शास्त्रीय सफलताएं', 'संग्रह' के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों को बम्बई से प्रसारित किए। 'कल्याणी संग्रह', 'ललिता गौरी' और 'चित्रा गौरी' कलकत्ता से, 'तोड़ी' और 'आसावरी' राग–रंग कार्यक्रम दिल्ली से एवं 'महफिल' मद्रास से, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में शैक्षणिक–पाठ आदि लखनऊ से प्रसारित होने लगे। मद्रास केन्द्र से उत्तरी मधुरिमाएँ भी प्रसारित होती थी। कलकत्ता से भी गिरिजा शंकर चक्रवर्ती द्वारा आधे घण्टे की शैक्षणिक कक्षा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत से सम्बन्धित दी जाती थी। तिरुचि से भी 'गाना सीखो' शीर्षक से संगीत शिक्षा दी जाती थी।

'मिल–जुल–गाएँ' नामक कार्यक्रम तथा अन्य कार्यक्रमों में भी शास्त्रीय संगीत की रचनाएँ सम्मिलित की जाती थीं।

2. **भारतीय शास्त्रीय वाद्य–संगीत** – ये समय की दृष्टि से अपेक्षाकृत कम अन्तराल का था। यह दिल्ली से 'वाद्ययंत्र, वीणा और मृदंगम, वाद्य त्रिक' तथा 'वाद्य युग्म' आदि शीर्षकों के अन्तर्गत प्रसारित होता था। आकाशवाणी के कुछ केन्द्रों–पेशावर–गायन से अधिक वाद्य संगीत के प्रसारण को प्रमुखता देते थे। 'तार–संगीत' और 'राग और वाद्य' बम्बई से, 'तबला–युगल' ढाका से, 'साज और संगीत' लखनऊ से, 'तारों पर माधुर्य' तिरूचि से प्रसारित होते थे। कार्यक्रमों में भी स्त्रियों, वन्य एवं ग्राम्य जनों के लिए वाद्य बजाय जाते थे। इनमें से कुछ अभिलिखित संगीत पर आधारित थे।
3. **सुगम शास्त्रीय संगीत** – ठुमरी, दादरा और टप्पा इस विद्या की सर्वाधिक लोकप्रिय शैलियां थीं। लखनऊ ने ठुमरी, दादरा और पेशावर ने टप्पा के विस्तार में सहयोग प्रदान किया।
4. **भारतीय वाद्यवृन्द प्रस्तुति** – आकाशवाणी केन्द्र का अपना वाद्यवृन्द था जैसा कि दिल्ली वाद्यवृन्द, ऑल इण्डिया रेडियो ध्वनि वाद्य, पेशावर बेतार वाद्य इत्यादि में सब विभिन्न रागों पर आधारित प्रस्तुतियां प्रसारित करते थे। इन रचनाओं को, शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने के लिए विशिष्ट श्रोता कार्यक्रमों में भी स्थान दिया जाता था।
5. **सुगम संगीत** – गजल, गीत, कब्बाली, नात और भजन आदि सुगम संगीत की कई विद्याओ ने कार्यक्रम–योजना को अधिकांश अपने अधिकार में ले रखा था। निःसन्देह, क्षेत्रीय प्रभाव के कारण इनके प्रसारण में अन्तर पाया जाता था। सन् 1943 ई. में आकाशवाणी दिल्ली 125 मिनट प्रतिदिन के हिसाब से सुगम संगीत प्रसारित करता था जबकि पेशावर व ढाका से 145 मिनट के लिये यह प्रसारण होता था। अन्य केन्द्र 80–90 मिनट प्रतिदिन का समय देते थे। गजलें शास्त्रीय रागों पर आधारित होती थीं। भजन और गीतों के 80 राग निर्धारित थे, 'राग रूप और धुन रूप गजलें' प्रसारित होती थीं और इन्हें स्त्री–कार्यक्रमों, वन्य जनों और ग्रामीणों के कार्यक्रमों के अन्तर्गत लिया जाता था। फिर भी क्षेत्रीय भाषाओं और संगीत विद्याओं ने सुगम संगीत को बहुत सीमा तक प्रभावित किया। 'मिश्रित लय' और कुछ अन्य कार्यक्रमों ने सुगम संगीत की सभी विद्याओं को एक ही कार्यक्रम में एकत्रित कर दिया।
6. **लोकसंगीत** – विभिन्न केन्द्रों से विभिन्न क्षेत्रों की लोकविद्याएँ प्रसारित की जाती थीं। पेशावर के 'पंजाबी गानें' और 'ढोलक के गीत' बम्बई से सिंधी व मराठी के गीत और अभग, कलकत्ता से भटियाली और झूमर, लाहौर से मुल्तानी काफी खानसा तथा पंजबी गीत और ढाका से बंगाली लोक परम्पराओं को लोकप्रिय बनाया गया। विशिष्ठ श्रोताओं के लिए वाद्य और गायन की विद्याओं को भी लोकसंगीत के ही नाम से प्रसारित किया जाता था।

7. **चित्रपठ संगीत** – यह बहुत ही अधिक लोकप्रिय था। यद्यपि यह एक सत्य है कि इसके प्रसारण का समय सुगम या शास्त्रीय संगीत की अपेक्षा अत्यन्त न्यून था।
8. **पाश्चात्य संगीत** – 'मध्यान्ह संगीत' को 50 मिनट के लिए बम्बई केन्द्र प्रसारित करता था और भी बहुत से केन्द्र इसे प्रसारित करते थे परन्तु कार्यक्रमों की दृष्टि से शास्त्रीय संगीत ही शिखर पर था।

ऐसी समस्याएं स्वतंत्रता से पहले विद्यमान थीं जिनके समाधान के लिये न तो आकाशवाणी के पास सार्मथ्य था और न ही आर्थिक स्रोत थे। प्रसारण के प्रारंभिक दिनों में कार्यक्रमों की श्रृंखला को टूटने न देना ही एक बड़ी समस्या थी। कार्यक्रम सहायक यहां तक कि केन्द्र संचालक भी माइक पर लाए जा सकने वाले कलाकारों की खोज में रहते थे। व्यक्तिगत नेतृत्व और उत्साह के कारण ही वे देश के अग्रगण्य संगीतज्ञों को आकाशवाणी कार्यक्रमों के दायरे में ला पाए।

उच्चतम शिखर पर पहुँचे संगीतज्ञों के साथ–साथ प्रतिभावान नवोदित युवा कलाकारों को भी आकाशवाणी के लिये कार्यक्रम देने हेतु उत्साहित और प्रेरित किया जाता था। कार्यक्रम सहायकों द्वारा ध्वनि–परीक्षण किये जाते थे जिन्हें कम से कम वरिष्ठ अधिकारी (सहायक केन्द्र निर्देशक या केन्द्र निर्देशक) द्वारा सुना जाता था। संगीतज्ञों का शुल्क और प्रसारण का समय एवं अन्तराल पारस्परिक वार्तालाप के माध्यम से ही निश्चित किये जाते थे। इसमें संचालक एवं सम्बन्धित कलाकार की मुख्य भूमिका होती थी। 150 रूपये से अधिक एक कुछ ही संगीतज्ञों को मिलता था। कुछ को मात्र 100 रूपये ही दिये जाते थे।

एक केन्द्र के कार्यक्रम उसके अधिकार में आने वाले क्षेत्र की सांगीतिक प्रतिभा के सूचक थे। ऑल इण्डिया रेडियो द्वारा एकल गायन या वादन प्रस्तुतियाँ उत्पादित नहीं की जाती थीं। आकाशवाणी केवल सुगम संगीत, वाद्य संगीत और गीति नाट्यों का ही उत्पादन करती थी। सन् 1947 ई. तक, आकाशवाणी द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों का आधार मूलतः प्रजातंत्रात्मक था। श्रोताओं की पसंद और न पसंद का ध्यान हर–एक केन्द्र अपने कार्यक्रमों को अन्तिम रूप देते हुये ही रखते थे। इस प्रकार की नीति के कारण, ऐसे ही कार्यक्रम प्रसारित होते थे जो मात्र सस्ते मनोरंजन के लिये ही नहीं बल्कि सच्चे अर्थों में लोकप्रिय भी हों। इस कारण ऐसे कार्यक्रमों की संख्या भी बहुत कम रही जो लोगों के द्वारा स्वीकार्य नहीं थे। इस प्रकार, भारतीय संगीत के प्रसारण में किये गए प्रारंभिक प्रयोगों में आने वाले वर्षों में सांगीतिक कार्यक्रमों के एक नियमित और सुदृढ़ नीति के निर्माणार्थ एक अग्रदूत की भूमिका निभाई।

आजादी से पूर्व मध्य प्रदेश में सर्वप्रथम इंदौर के महू में रमच्योर रेडियो क्लब का प्रारम्भ हुआ था। महू में कलाकार एवं विशेषज्ञों का समूह कार्यक्रम निर्मित करता था, जिनका प्रसारण रेडियो पर किया गया था। बगैर लाइसेंस के रेडियो चलाने पर जुर्माना देना होता था। स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् इंदौर के मुख्य डाकघर में सुनिश्चित शुल्क अदाकर रेडियो के लाइसेंस का नवीनीकरण करवाने की सुविधा उपलब्ध थी। वर्ष 1982 में दूरदर्शन आ जाने के पश्चात् लाइसेंस की नवीनीकरण करवाने की प्रक्रिया बन्द हो गयी। विदित है कि इन्दौर के प्रसिद्ध पांड्या फोटोग्राफर की सन् 1953 में ब्रिज के पास एक दुकान मौजूद थी। इतिहासकार अंसारी के अनुसार इंदौर में सन् 1932 के करीब सर सेठ हुकमचन्द द्वारा विदेश से रेडियो बुलायी थी। उस समयावधि इंदौर के इतवारिया बाजार में कांच मंदिर के समीप एक कमरे में रेडियो इंस्टालेशन हुआ था। रेडियो में तकरीबन 20–30 बल्बनुमा बल्ब लगा हुआ था और बटन दबाने के 1–2 मिनट पश्चात् रेडियो चालू होता था। अतएव रेडियो जिस कमरे में इंस्टाल था उसके बाहर एक जालीनुमा लम्बी सी पट्टी, जिसे रेडियो एरियल के नाम से सम्बोधित किया जाता, तांबे के तार से तार मिलाने पर रेडियो में साफ आवाज आता था। बिट्रिश शासन काल में बगैर लाइसेन्स के रेडियो कदापि नहीं चलाये जा सकते थे।

प्रदेश के इंदौर में 22 मई 1955 को आजाद नगर स्थित आकाशवाणी केन्द्र में सर्वप्रथम 20 किलोवाट का ट्रांसमीटर लगायी गई थी। वर्तमान समय में मऊ में आकाशवाणी का 200 किलोवाट का मीडियम वेब डिजिटल ट्रांसमीटर लगी हुई है। इसके साथ ही यहाँ पर 100 किलोवाट का बल्ब अर्था बल्बनुमा आधारित ट्रांसमीटर भी स्थापित है, जिसे चालू करने के पश्चात् 2–3 मिनट पर ट्रांसमिशन प्रारम्भ हो जाती है। इसके अतिरिक्त विविध भारती का 10 किलोवाट का फ्रिक्वेंसी का ट्रांसमीटर नौलघा पर स्थापित हुआ है। मध्यप्रदेश में आकाशवाणी (ऑल इंडिया रेडियो) के अनेक केन्द्र स्थापित हैं, जो राज्य के भिन्न–भिन्न भागों में सूचना, शिक्षा और मनोरंजन का प्रसार करते हैं। शोधार्थी ने प्रमुख आकाशवाणी केन्द्रों की स्थापना एवं तिथियों को दर्शाया है, जिनका विवरण इस प्रकार है –

क्रमांक	केन्द्र	स्थापना तिथि
1	इंदौर	22 मई, 1955
2	भोपाल	31 अक्टूबर 1956
3	जबलपुर	11 अगस्त 1964
4	ग्वालियर	15 अगस्त 1964
5	छतरपुर	07 अगस्त 1976
6	उज्जैन, सागर, छिंदवाड़ा, रतलाम, शहडोल, खजुराहो, बैतूल, धार, मंडला आदि	1980 के दशक में स्थापित
7	रीवा	1977

इन केन्द्रों का उद्देश्य स्थानीय समुदायों तक महत्वपूर्ण सूचनाएँ पहुँचाना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रसारण करना एवं आपात स्थितियों में जागरुकता विस्तारित करना है। साक्ष्य के रूप में जिला शहडोल में आकाशवाणी केन्द्र ने हाथियों के आगमन की सूचना प्रसारित कर वहाँ के स्थानीय निवासियों को सतर्क किया, जिससे मानव हाथी संघर्ष को रोका जा सके।

प्रदेश में आकाशवाणी केन्द्रों ने मोबाइल प्लेटफार्म पर भी अपनी पहुँच में वृद्धि किया है, जिससे व्यक्ति अपने स्मार्टफोन पर विभिन्न चैनलों का सीधा प्रसारण सुन सकते हैं। इसके अतिरिक्त शास्त्रीय संगीत एवं लोकगीत भी उपलब्ध है, जिससे व्यक्ति/श्रोता कभी भी, कहीं भी इनका आनन्द उठा सकते हैं। इन प्रयासों के माध्यम से आकाशवाणी केन्द्र स्थानीय समुदायों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर रहे हैं और सूचना के प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। आकाशवाणी मध्य प्रदेश के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के साथ–साथ व्यक्तियों तक चेतना का संदेश पहुँचाने में भूमिका निभा रहा है। खासतौर पर प्रदेश के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्तियों के विकास में रेडियों अपने प्रसारित कार्यक्रमों द्वारा अलख जाग्रत करने का कार्य करता है। प्रदेश में चेतना का संचार करने में आकाशवाणी का अप्रतिम भूमिका रही है। मध्य प्रदेश के एकान्त, जंगल एवं पहाड़ों पर विकसित व्यक्तियों तक पहुँचने का प्रमुख माध्यम रेडियो है। समानता, शिक्षा, स्वास्थ्य, निर्धनता निवारण और पेयजल इत्यादि अनेक कार्यक्रम है, जिसका प्रसारण भिन्न–भिन्न आकाशवाणी केन्द्रों से होता है, जिससे कृषि कार्य, आकाशवाणी ग्रामीण अंचल में, शास्त्रीय एवं लोकगीत इत्यादि प्रमुख हैं।

सूचना और मनोरंजन की दृष्टिकोण से आकाशवाणी एक सशक्त माध्यम है। आकाशवाणी के प्रसारण केन्द्रों ने प्रदेश की संस्कृति एवं अन्य क्षेत्रीय संस्कृति को संजोने और सहेजने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। प्रदेश के सम्पूर्ण प्रसारण केन्द्रों से मानव चेतना से सम्बन्धी कार्यक्रमों का प्रसारण निरन्तर किया जा रहा है। इसमें पेयजल व्यवस्था, गरीबी उन्मूलन, शिक्षा, परिवार नियोजन एवं समानता इत्यादि प्रमुख हैं। आकाशवाणी केन्द्रों से प्रदेश के कृषकों हेतु विशिष्ट कार्यक्रम 'खेती–किसानी' का प्रसारण किया जाता हैं इसके अतिरिक्त आकाशवाणी के सासाराम केन्द्र से आदिवासी जनचेतना के लिए 'आकाशवाणी गांव में' नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम जिसका नाम आकाशवाणी गांव में हैं, आदिवासी समस्या से संबंधित है, जिनमें स्वास्थ्य, पेयजल एवं कृषि संबंधित जुड़ी इत्यादि समस्याओं को उठायी गई तथा ग्रामीण अंचलों के व्यक्तियों से इस पर बातचीत किया गया। इसका प्रभाव यह पड़ा कि व्यक्तियों ने अपनी आवाज सुनने हेतु रेडियो खरीदा। आकाशवाणी पर आने वाले कार्यक्रमों को सुनना प्रारम्भ कर दिया।

शास्त्रीय संगीत एवं लोक गीत के क्षेत्र में आदिवासी व्यक्तियों की रुचि बढ़ाने के लिए और प्रतिभा को ढूढ़ने के ध्येय से आकाशवाणी द्वारा एक टैलेंट से शुरू किया। इस शो को 'आदिस्वर' का नाम दिया गया। आदिस्वर नामक इस प्रोग्राम में समग्र आदिवासी अपना ऑडियो रिकार्डिंग अथवा गाने की सीडी किसी भी आकाशवाणी केन्द्र पर भिजवा सकते हैं। अतः आकाशवाणी ने 'आदिस्वर' कार्यक्रम द्वारा आदिवासियों को खुला मंच मुहैया करायी है। आकाशवाणी का इन्दौर केन्द्र लम्बी समयावधि से आदिवासियों की संस्कृति, कला, लोकगीतों और लोकसंगीत को व्यक्तियों तक पहुँचाने में सफल रहा। मध्यप्रदेश के गठन होने के पश्चात् यह आकाशवाणी केन्द्र और अधिक विकसित हुआ और सरकार की विकास योजनाओं की जानकारी व्यक्तियों तक पहुँचाने के साथ ही साथ शिक्षा, सूचना, शास्त्रीय संगीत, लोकगीत एवं मनोरंजन का व्यापक माध्यम बन गयी। मध्य प्रदेश की सरकार ने अपने सम्बोधन में मध्यप्रदेश की बहुत बड़ी जनसंख्या आज भी ग्रामीण अंचलों में

अपना जीवन व्यतीत कर रही है, जहाँ आदिवासी भाषाओं में व्यक्तियों तक विकास योजनाओं की जानकारी पहुँचाने में आकाशवाणी की सर्वाधिक व्यापक भूमिका रही है।

संदर्भ –

1 शर्मा, गोपाल. भारतीय जनसंचार माध्यम. नई दिल्लीः राजपाल एण्ड सन्स, 2014, पृ. 112.
2 त्रिपाठी, रामनारायण. लोक संस्कृति और प्रसारण माध्यम. इलाहाबादः साहित्य भवन, 2011, पृ. 89.
3 सिंह, आर.पी. ग्रामीण विकास और रेडियो प्रसारण. जयपुरः रावत पब्लिकेशन, 2016, पृ. 134.
4 वर्मा, एस.के.. जनजातीय संस्कृति और संचार माध्यम. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन, 2013, पृ. 156.
5 कुमार, अजय. मीडिया और सामाजिक जागरूकता. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन, 2021, पृ. 97.
6 मिश्रा, हेमन्त. रेडियो पत्रकारिता एवं प्रसारण कला. वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2018, पृ. 201.
7 पाण्डेय, शशिभूषण. भारतीय रेडियो का सामाजिक योगदान. प्रयागराजः लोकभारती प्रकाशन, 2015, पृ. 174.
8 चतुर्वेदी, जगदीश्वर. भारतीय प्रसारण का इतिहास. नई दिल्लीः अनामिका पब्लिशर्स, 2010, पृ. 52